शिक्षा व दर्शन: रविंद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

Doi : Https://Doi.Org/10.61703/Re10

डॉ. विजय कुमार वर्मा*

संक्षेप

शैक्षिक दर्शन शिक्षा की एक व्यापक प्रणाली निमित्त करने में मदद करती है। समय के साथ शिक्षा पद्धति में विभिन्न परिवर्तन आए हैं। जहां एक ओर वर्तमान शिक्षा पद्धति नैतिक मूल्यों के संकट का सामना कर रही है, वहीं दूसरी ओर हम शैक्षिक संस्थान और उनके दैनिक कामकाज में शिक्षा द्वारा प्रस्तावित दार्शनिक आदर्शों के बीच के अंतराल को देख सकते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए हमें भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में जाना होगा जहां विभिन्न विचारक जैसे महात्मा गांधी, रविंद्रनाथ टैगोर, श्री अरबिंदो, स्वामी विवेकानंद और जवाहरलाल नेहरू इत्यादि के शैक्षणिक विचार जो वर्तमान समय में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह हम रविंद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों की समकालीन प्रासंगिकता पर चर्चा करेंगे।

कुंजी शब्द:- शिक्षा, दर्शन, स्वतंत्रता, मानवतावाद, विभिन्नता, रचनात्मक शिक्षा व स्वर्णिम विकास।

शिक्षा व दर्शन का अर्थ

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति 'शिक्ष' धातु से हुई है, जिसका अर्थ- सीखने, ज्ञान ग्रहण करने या विद्या प्राप्त करना है। शिक्षा शब्द का अंग्रेजी रूपान्तर शब्द Education है। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है। लैटिन भाषा के एडुकेटम 'Educatum' शब्द का अर्थ है - शिक्षण कार्य करना। शिक्षा व्यक्ति को आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों का ज्ञान कराती हैं। अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में शिक्षा की अहम भूमिका हैं समाज एवं देश के एक योग्य नागरिक बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका हैं। प्राचीन काल से, शिक्षा को प्रगति और समृद्धि का मार्ग माना जाता है। पूर्वी और पश्चिमी दोनों पक्षों के विभिन्न शिक्षाविदों के विचारों ने समय की आवश्यकता के अनुसार 'शिक्षा' शब्द की व्याख्या की है। जहां भारतीय विचारक अध्यात्मवाद और शाश्वत सत्य पर चलना चाहते हैं, वहीं पश्चिमी दार्शनिक परिस्थिति की आवश्यकता और सुविधा के अनुसार अपने अर्थ में भिन्न होते हैं।

रविंद्रनाथ टैगोर- शिक्षा मन को परम सत्य का पता लगाने में सक्षम बनाती है, जो हमें आंतरिक प्रकाश और प्रेम का धन देती है और जीवन को महत्व देती है।"

विवेकानंद- "शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद दिव्य पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

गांधीजी- "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य-शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण चित्रण है।" प्लेटो- "शिक्षा सही समय पर सुख और दुख को महसूस करने की क्षमता है।

जॉन डेवी- " शिक्षा अनुभवों के निरंतर पुनर्निर्माण के माध्यम से जीने की प्रक्रिया। (शर्मा 2011)

दर्शन शब्द का मूल अर्थ ग्रीक मूल फिलो से आया है- जिसका अर्थ है "प्रेम" और -सोफोस, या "ज्ञान।" जब कोई दर्शनशास्त्र का अध्ययन करता है तो वे यह समझना चाहते हैं कि लोग कुछ चीजें कैसे और क्यों करते हैं और एक अच्छा जीवन कैसे जीते हैं।

*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) संपर्क - 9810626397
vijayvermadu@gmail.com

दूसरे शब्दों में, वे जीवन का अर्थ जानना चाहते हैं। आज की दुनिया में दर्शन शब्द का प्रयोग प्रचलित है। दर्शन जीवन के लगभग किसी भी क्षेत्र में लागू होने वाला शब्द है।

शिक्षा में दर्शन का महत्व

शिक्षा और दर्शन दोनों के अर्थ और अवधारणा पर चर्चा करने के बाद, दोनों के बीच संबंधों को स्पष्ट करना बहुत मुश्किल नहीं है। शिक्षा और दर्शन, दो विषयों, बहुत निकट से संबंधित हैं और कुछ क्षेत्रों में वे एक दूसरे को ओवरलैप करते हैं। (श्रीवास्तव 2017) रुसो के अनुसार, "दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं; एक दूसरे के द्वारा निहित है; पहला जीवन का चिन्तनशील पक्ष है, जबकि दूसरा सक्रिय पक्ष है।" शिक्षा को दर्शन का गतिशील पक्ष कहा जा सकता है क्योंकि दर्शन ज्ञान है; शिक्षा उस ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है। शिक्षा दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों का अनुप्रयोग है। दर्शन आदर्श, मूल्य और सिद्धांत देता है, शिक्षा उन आदर्शों, मूल्यों और सिद्धांतों पर काम करती है। शिक्षा का अस्तित्व दर्शन के कारण है और उसी तरह दर्शन का अस्तित्व शिक्षा के कारण है। जब हम शिक्षा को व्यवहार के संशोधन के रूप में परिभाषित करते हैं, तो जिस दिशा में संशोधन किया जाना है, वह दर्शन द्वारा निर्धारित किया जाता है। "दर्शन के बिना शिक्षा अंधी है और शिक्षा के बिना दर्शन अमान्य है"।

रविंद्रनाथ टैगोर, अरबिंदो, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, लोके, कोमेनियस, फ्रोबेल और रूसो जैसे महान दार्शनिक महान शिक्षाविद् भी रहे हैं। सुकरात ने दुनिया को शिक्षण में 'प्रश्न पूछने और प्रश्न पूछने की विधि' दी। रूसो ने सुझाव दिया कि शिक्षा को प्रकृति का अनुसरण करना चाहिए। गांधी ने बुनियादी शिक्षा की योजना का प्रचार किया। आमतौर पर शिक्षा शब्द का उपयोग दो रूपों में किया जाता हैं एक व्यापक एवं विस्तृत एवं दूसरे संकुचित अर्थ में। विस्तृत परिपेक्ष्य में शिक्षा को समाज में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है। जिसके चलते ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में बदलाव लाया जाए, जिसका लक्ष्य व्यक्ति को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक का निर्माण करना होता हैं। वही संकुचित अर्थ में शिक्षा का आशय निश्चित स्थान में एक बालक को निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़ाकर उन्हें उतीर्ण करने की व्यवस्था को शिक्षा का नाम दिया जाता हैं। यह हम रविंद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचार

रविंद्रनाथ टैगोर (1861-1941) कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। भारत में शिक्षा के क्षितिज में, रविंद्रनाथ टैगोर एक सुबह के सितारे की तरह चमकते थे, शांतिनिकेतन'' उनके उच्च आदर्शों और जीवन के दर्शन की गवाही देता है जिसने शिक्षा के क्षेत्र में एक परिवर्तन किया। स्कूली जीवन के अपने छोटे से समय ने उन्हें यह महसूस कराया कि स्कूल एक ऐसा स्थान है जो बच्चे के मूल विकास को बाधित करने के लिए प्रेरित करता है और व्यक्तित्व के विकास को नुकसान पहुंचाता है।

उनका दर्शन मानवतावाद, व्यक्तिवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद, अध्यात्मवाद, अंतर्राष्ट्रीयवाद और राष्ट्रवाद का समामेलन है। रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार "शिक्षा का अर्थ है मन को उस परम सत्य का पता लगाने में सक्षम बनाना जो हमें धूल के बंधन से मुक्त करता है और हमें चीजों का नहीं बल्कि आंतरिक प्रकाश का, शक्ति का नहीं बल्कि प्रेम का धन देता है, इस सत्य को अपना बनाता है और हमें अभिव्यक्ति देता है।" रविंद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों को हम उनके द्वारा लिखित विभिन्न कृतियों में देख सकते हैं जैसे – रियल एजुकेशन (1901), मास्टर जी (1913), पर्सनालिटी (1917), क्रिएटिविटी यूनिटी (1922) और रिलीजस एजुकेशन (1935)।

उनका शैक्षिक दर्शन पाँच प्रमुख सिद्धांतों को स्वीकार करता है-

(i) बच्चे के लिए स्वतंत्रता:- रविंद्रनाथ टैगोर शिक्षा की प्रचलित प्रणाली के विरोधी थे जो बच्चे को व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए स्वतंत्रता प्रदान करने के विरोध में थे। उन्होंने कहा, "स्वतंत्रता का मतलब केवल नियंत्रण की स्वतंत्रता और आत्म-इच्छा का अधिकार नहीं है। इसका अर्थ है व्यक्तित्व के सभी पहलुओं और शक्तियों, जैसे इंद्रियों, महत्वपूर्ण ऊर्जाओं, बुद्धि और कल्पना सहित विभिन्न मानसिक क्षमताओं, साथ ही हृदय के कार्यों- भावनाओं, भावनाओं, सहानुभूति और प्रेम की मुक्ति।
(टैगोर, 1901)

(ii) प्रकृति और मनुष्य के साथ सक्रिय संचार :- रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार, शिक्षा को एक व्यक्ति को प्रकृति के साथ अपने तत्काल संबंध को महसूस करने में सक्षम बनाना चाहिए। प्रकृति के साथ उनके सक्रिय संपर्क के माध्यम से उनका सहज विकास और प्राकृतिक विकास संभव हो सकता है वह इसे "प्रकृति की विधि" कहते हैं। अर्थपूर्ण शिक्षा वह है जो बच्चे को लोगों के संपूर्ण जीवन - आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, सौंदर्य और आध्यात्मिक जीवन के संपर्क में आने में सक्षम बनाती है।

(iii) रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति :- शिक्षा को बच्चों को आत्म-अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण पैमाने पर अवसर प्रदान करना चाहिए। स्व-अभिव्यक्ति के लिए बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों जैसे कला, शिल्प, संगीत, ड्राइंग, पेंटिंग, नाटक आदि को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व का विकास करना है। (टैगोर ,1917)
(iv) अंतर्राष्ट्रीयवाद :- उन्होंने आपसी समझ, प्रेम और मानव जाति के सम्मान के माध्यम से सभी वर्गों के लोगों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध की वकालत की। वह सहयोग और आपसी समझ के सूत्र से मानवता को जोड़ना चाहते थे। यह सिद्धांत विश्वभारती शिक्षा प्रणाली में निहित हैं,उनकी शिक्षा प्रणाली अंतर्राष्ट्रीयवाद के सिद्धांत पर आधारित थी।
रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य
रविंद्रनाथ टैगोर कि शिक्षा के निम्न उद्देश्य थे-
(i) नैतिक और आध्यात्मिक उद्देश्य:- रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चे के व्यक्तित्व के नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं का विकास होना चाहिए। (टैगोर, 1935) इसके लिए उन्होंने आंतरिक विकास, आंतरिक स्वतंत्रता की प्राप्ति, आंतरिक शक्ति और ज्ञानोदय पर जोर दिया।

(ii) शारीरिक विकास:- रविंद्रनाथ टैगोर ने बच्चों की शारीरिक विकास पर जोर दिया, जिसके लिए उन्होंने प्रकृति में शिक्षा; खेल गतिविधियाँ, नृत्य, व्यायाम, शरीर और संवेदी प्रशिक्षण कि गातिविधियो को शिक्षा कार्यक्रम में शामिल करने कि बात की। रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार 'यदि मन की शिक्षा के साथ-साथ शरीर की शिक्षा आगे नहीं बढ़ती है, तो मन की शिक्षा बल नहीं ले सकती।"

(iii) बौद्धिक विकास :-रविंद्रनाथ टैगोर चाहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य स्वतंत्रता, जिज्ञासा और मन की सतर्कता के माध्यम से विचारों को प्राप्त करने की शक्ति को विकसित करना और विचारों को समालोचनात्मक रूप से मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए।

(iv) अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा:- मानवता के प्रेमी होने के नाते, रविंद्रनाथ टैगोर शिक्षा द्वारा पूर्वी संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति के बीच एक संश्लेषण करना चाहते थे। वह मानव जाति की एकता और सद्भाव के लिए अंतर-सांस्कृतिक और अंतर-सामाजिक समझ को

बढ़ावा देना चाहते थे। वह मानवतावाद के प्रबल समर्थक थे उनका मानना था कि "मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।(टैगोर, 1922)

(v) पूर्णता के लिए शिक्षा :- रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य सभी मानव व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास होना चाहिए। (टैगोर,1917) दूसरे शब्दों में, शिक्षा का उद्देश्य एक व्यक्ति को दूसरे की कीमत पर उपेक्षा किए बिना पूर्ण या पूर्ण बनाना होना चाहिए।

शिक्षा का पाठ्यचर्या :- शिक्षा की अपनी योजना में उन्होंने प्रकृति की शिक्षा और मनुष्य की शिक्षा के बीच, और पूर्व और पश्चिम की संस्कृति के बीच संतुलन बनाया है, उनका पाठ्यक्रम लचीला, गतिशील और बाल-केंद्रित था और इसके सभी पहलुओं में व्यक्तित्व के विकास का उद्देश्य शामिल था। उन्होंने मातृभाषा के अध्ययन और शिक्षा के उच्च स्तर पर समर्थन किया; उन्होंने संस्कृति, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में ज्ञान के खजाने को जानने के लिए अंग्रेजी सीखने का समर्थन किया। उन्होंने विश्व इतिहास, भारत की संस्कृति, साहित्य, भूगोल, विज्ञान आदि के अध्ययन का भी सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि चलते-चलते पढ़ाना सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है। उन्होंने सुझाव दिया कि भ्रमण और अध्ययन दौरों के माध्यम से सामाजिक विज्ञान विषय को बेहतर ढंग से पढ़ाया जा सकता है। उन्होंने विधि द्वारा चर्चा और गतिविधि या सीखने का पक्ष लिया।

शिक्षक की अवधारणा:- अपनी शिक्षा योजना में, रविंद्रनाथ टैगोर ने शिक्षक की भूमिका को बहुत अधिक महत्व दिया है। शिक्षक सभी प्रमुख मूल्यों और आदर्शों का अवतार है। एक छात्र के जीवन में एक शिक्षक कि भुमिका एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक कि होती है। रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार, गुरु “मानवता की पूर्णता प्राप्त करने के प्रयासों में सक्रिय" हैं" जो केवल पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित सामग्री को साझा करने कि बजाय छात्र के विकास में अपने आप को पुरी तरह से समर्पित कर दे।(टैगो,1901) उन्होंने कहा कि एक शिक्षक तब तक सही मायने में नहीं पढ़ा सकता जब तक कि वह खुद सीख नहीं रहा हो। "एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक नहीं जला सकता जब तक कि वह अपनी लौ को जलाता न रहे"।

रविंद्रनाथ टैगोर का शांतिनिकेतन: एक प्रयोग :- रविंद्रनाथ टैगोर ने अपने शिक्षा संबंधी विचारों को शांतिनिकेतन के रूप में आकार दिया। यह जाति, पंथ और अन्य प्रकार के भेद के आधार पर बिना किसी भेद के एक सामुदायिक स्कूल था। जिसे विश्वभारती का नाम दिया गया संक्षेप में, विश्वभारती विश्वविद्यालय गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर का अद्वितीय योगदान है जहाँ शिक्षा के चौगुने विकास का पालन किया जाता है, जैसे, स्वतंत्रता, रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति, प्रकृति और मनुष्य के साथ सक्रिय संवाद और अंतर्राष्ट्रीयता। यह मानव जाति की आध्यात्मिक एकता और सार्वभौमिक भाईचारे का उपदेश देता है।

रविंद्रनाथ टैगोर के शैक्षणिक विचारों कि समकालीन प्रासंगिकता

भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं, साथ ही शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलावों पर जोर दिया जा रहा है। पश्चिमी शिक्षा का भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जिसके तहत हम मुख्यता अंक, तर्क और वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली पर जोर देते रहे हैं, जिसके कारण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आधार नैतिक शिक्षा अपना महत्व खो रहा है। इस कारण वश नई शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा और कौशल विकास पर मुख्य बल दिया गया, जो भारतीय शिक्षा दर्शन का एक महत्वपूर्ण आधार था। भारतीय विचारक हमेशा नैतिक शिक्षा और व्यक्ति के विकास पर मुख्य जोर देते रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम भारतीय दर्शन का अध्ययन करें और विचारक- गांधी, विवेकानंद, रविंद्रनाथ टैगोर, नेहरू, अरबिंदो और दयानंद आदि के विचारों को समकालीन जीवन में शामिल करें।

रविंद्रनाथ टैगोर एक महान विचारक, लेखक व शिक्षक थे उन्होंने 'अपने सामाजिक आदर्शों को लागू करने के लिए संघर्ष किया और शिक्षा के माध्यम से एक सामाजिक संरचना का निर्माण करने का प्रयास किया'। स्वतंत्रता और शिक्षक की उनकी अवधारणा अति महत्वपूर्ण है जिसे वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी भूल नहीं सकती है। उन्होंने प्राकृतिक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया, बच्चों के लिए अपने शरीर के माध्यम से प्रकृति का अनुभव करना महत्वपूर्ण है ताकि वह अपना रचनात्मकता रूप से विकास कर सकें।

दर्शनशास्त्र का अनुशासन चार लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक अनिवार्य तरीके से योगदान देता है जो उच्च शिक्षा के किसी भी संस्थान के लिए मौलिक होना चाहिए: छात्रों में आलोचनात्मक सोच की आदत डालना, उनके पढ़ने, लिखने और सार्वजनिक बोलने के कौशल को बढ़ाना, उन्हें सांस्कृतिक विरासत हस्तांतरित करना, उन्हें वास्तविकता, ज्ञान और मूल्य के बारे में मौलिक प्रश्नों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना। दर्शन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का आधार है। यदि हम लक्ष्य, पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण के तरीके, कक्षा अनुशासन, समय सारिणी, शिक्षक, प्रधानाध्यापक को देखें, तो हम पाते हैं कि वे सभी दर्शन द्वारा निर्धारित होते हैं। इस संबंध में शिक्षा के क्षेत्र में रविंद्रनाथ टैगोर के विचार एक दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं जो वर्तमान संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में रविंद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों को विभिन्न तरीकों से लागू कर सकते हैं। उनके विचार हमारी शिक्षा प्रणाली की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेंगे और शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए शिक्षा को रचनात्मक बनाएंगे। इसके लिए हमें सबसे पहले अपनी शिक्षा प्रणाली में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव लाने होंगे। शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थाओं को शिक्षा कार्यक्रम में रविंद्रनाथ टैगोर के शिक्षा विचारों को शामिल करने की आवश्यकता है ताकि छात्र और शिक्षक उनके विचारों को समझ सकें, जिससे शिक्षकों, छात्रों और पूरे समाज को लाभ होगा। रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार अभिभावकों व शिक्षकों को अपनी सोच को छात्रों पर नहीं थोपना चाहिए। उनकी जिज्ञासा, आश्चर्य, कल्पना और रचनात्मक आनंद, विचार और व्यवहार की आदतों को विकसित करने की चिंता प्रदान करनी चाहिए जिससे उन्हें नवीन चीजों को सिखाने का अवसर मिलेगा। व्यक्ति कि यही रचनात्मक सोच व स्वतंत्रता एकता का निर्माण करती है वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली मुक्त आंदोलन को प्रतिबंधित करता है जो उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन है। रविंद्रनाथ टैगोर की रचनात्मकता की दृष्टि और इसके निहितार्थ वास्तविकता ने, मनोविज्ञान और शिक्षा दोनों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रदान किया।(टैगोर,1922)

वर्तमान समय में युवाओं के बीच हिंसा सामान्य होती जा रही है जो कहीं न कहीं हमारी शिक्षा पद्धति की असफलता को दर्शाती है। युवा वर्ग में विभिन्न धर्मों व सभ्यता को लेकर विकसित होती रूढ़िवादी सोच इसका प्रमुख कारण है। इसके लिए रविंद्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधी विचारों और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। शिक्षा के उनके मॉडल में ऐसे तत्व हैं जिनके आधार पर एक मजबूत शांति की एक नई संस्कृति की नींव रखी जा सकती है। उनके विचारों का अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि उनकी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य विभिन्न स्तरों लोगों के बीच दोस्ती (मैत्री) वैश्विक स्तर पर शांति, समाज के भीतर शांति, मनुष्यों के बीच शांति, प्रकृति के साथ शांति, स्वयं के भीतर शांति और प्रेम संबंध बनाना था।(मालवीय,2020) रविंद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक मॉडल का उद्देश्य बहु-नस्लीय, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक माहौल के बीच शिक्षा का विकास करना था, ताकि छात्र को विभिनता पूर्ण माहौल में सीखने का अवसर मिले।(मण्डल,2020)

रविंद्रनाथ टैगोर धार्मिक शिक्षा को शिक्षा से अलग करने के पक्ष में नहीं थे, उनके अनुसार धार्मिक शिक्षा का अर्थ रूढ़िवादिता परंपरा की शिक्षा नहीं बल्कि धर्म का आधार कुछ मूल्य होते है जो व्यक्ति के विकास में भूमिका निभाते हैं तथा इसे हम अपने हर क्षेत्र में सीखते है एक विद्यार्थी संगीत, नृत्य व खेल हर शैक्षणिक माहौल में अपनी आध्यात्मिकता को विकसित करने का प्रयास कर रहा होता है।(टैगोर,1935) शायद हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली इस ही अध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा की कमी को महसूस कर रही है जिसे विकसित करना शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। वह चाहते थे कि लड़के और लड़कियां निडर, स्वतंत्र और खुले विचारों वाले, आत्मनिर्भर, आत्मा से परिपूर्ण और आत्म-आलोचनात्मक, साथ ही अन्य धर्म सभ्यता संस्कृति के साथ सहयोग व एकता की भावना विकसित करें। (तिरथराम,2017) अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तियों आत्म-साक्षात्कार के

साधनों को पूरा करने के लिए सुविधा प्रदान करना है। एक राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली को राष्ट्र के सभी लोगों को समान ज्ञान और कौशल बल के साथ सर्वांगीण विकास का अवसर प्रदान करने के लिए सक्षम होना चाहिए।

रविंद्रनाथ टैगोर के विचारों का अध्ययन करने से शिक्षकों को शिक्षण के नए तरीकों की जानकारी मिलेगी, जिससे छात्रों को नई जानकारी बहुत रचनात्मक तरीके से सीखने को मिलेगी और शिक्षा में उनकी रुचि बनी रहेगी। (गोस्वामी एवं मालवीय,2016) जबकि रविंद्रनाथ टैगोर की आध्यात्मिक, प्राकृतिक और नैतिक शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी विकास दोनों के लिए आवश्यक है। रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षक की शिक्षा में सुधार की आवश्यकता है, उनके पाठ्यक्रम में बच्चों के मनोविज्ञान की गहन समझ को भी शामिल करना चाहिए। (टैगोर,1913) वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से व्यक्ति के बाहरी और संख्या और ग्रेड आधार मूल्यांकन पर जोर देती है, जिसके कारण वर्तमान में व्यक्ति का नैतिक शोषण देखा जा रहा है। रविंद्रनाथ टैगोर शिक्षा में समान नैतिक विचारों को स्थापित करने पर जोर देते हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

आज भारत संक्रमण काल से गुजर रहा है। हमारी पुरानी मान्यताएं वर्तमान संदर्भ में अपना मूल्य लगभग खोती जा रही हैं। वस्तुतः समाज संघर्ष की स्थिति में है, शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में दो विरोधी विचारधाराएँ हैं, एक शिक्षा के भारतीय दर्शन का समर्थन करती है जो आध्यात्मिक, नैतिक, मूल्य, मानव और सामाजिक विकास आदि पर जोर देती है और दूसरा शिक्षा का पश्चिमी दर्शन जो तर्क, विज्ञान पर जोर देता है। एक महत्वपूर्ण शिक्षा प्रणाली के लिए, यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा नीति में इन दोनों पहलुओं को शामिल करें, मूल्यों और तर्क के बीच संतुलन स्थापित करें और आंतरिक शिक्षा और आंतरिक विकास के साथ व्यक्ति के बाहरी विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ

अमन शर्मा. (2011) भारतीय और पश्चिमी दार्शनिकों के दृष्टिकोण से शिक्षा के अर्थ का मूल्यांकन। नई दिल्ली: रोपा

श्रीवास्तव, किरण (2017): भारत में शिक्षा दर्शन की भूमिका, तत्व- जर्नल ऑफ फिलॉसफी, खंड 9(2), पृ.सं. 11-21. doi.org/10.12726/tjp.18.2

टैगोर, रवींद्रनाथ (1901): "वास्तविक शिक्षा", नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

टैगोर, रवींद्रनाथ (1917): "व्यक्तित्व", न्यूयॉर्क: द मैकमिलन कंपनी।

टैगोर, रवींद्रनाथ (1935): "धार्मिक शिक्षा", रवींद्रनाथ टैगोर का अंग्रेजी लेखन, खंड 4, एक विविध संस्करण, दिल्ली: साहित्य अकादमी।

टैगोर, रवींद्रनाथ (1922): "रचनात्मक एकता", खंड 3, एक विविध संस्करण, नई दिल्ली: रोपा

टैगोर, रवींद्रनाथ (1917): "व्यक्तित्व"।

टैगोर, रवींद्रनाथ (1901): "वास्तविक शिक्षा"।

टैगोर, रवींद्रनाथ (1922): "रचनात्मक एकता"।

मालवीय, ऋतंभरा (2020): शिक्षा के माध्यम से 'मैत्री' को बढ़ावा देना: टैगोर और शांति के लिए शिक्षा, जर्नल ऑफ पीस एजुकेशन, पृ.सं.72-91। https://doi.org/10.1080/17400201.2020.1835622

मंडल, प्रोसंत कुमार (2020): रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और वर्तमान शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता, एशियन पब्लिकेशन हाउस। https://ijesrr.org/publication/57/26.%20ijesrr%20oct%202018.pdf

टैगोर, रवींद्रनाथ (1935): "धार्मिक शिक्षा"।

तिरथराम। (2017): समकालीन शिक्षा में रवींद्रनाथ टैगोर शिक्षा की भूमिका और प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट। खंड 7 (1)। 2278-3660।

https://www.ripublication.com/ijbamspl17/ijbamv7n2spl_14.pdf

गोस्वामी एन और मालवीय, डी.एस. (2016): आधुनिक भारत में रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता।

https://ijip.in/wp-content/uploads/ArticlesPDF/article_54170c6f054f331c1ec4ac811bc775e6.pdf

टैगोर, रवींद्रनाथ (1913): "मास्टर जी", दिल्ली: साहित्य अकादमी।